विचार बिन्दु

जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए बस करना बाकी रह जाता है।

–इटैलियन कहावत

सुप्रीम कोर्ट एक न्यायालय है अत: पूर्ण पारदर्शिता अनिवार्य है।

संविधान में न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग रखा गया है। संविधान के अनुच्छेद 50 में राज्य को निर्देश दिया है कि राज्य न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक करने की ओर कदम उठायेगा और राज्य ने संविधान लागू होते ही कार्यपालिका को न्यायपालिका से पृथक कर दिया।

कुछ समय से देखने में यह आ रहा है कि विधायिका आवाज उठा रही है, वह सुप्रीम है उसके काम में न्यायपालिका दखल नहीं दे सकती। कॉलेजियम के प्रश्न को लेकर कार्यपालिका, न्यायपालिका के जजों की नियुक्ति को लेकर दखल दे रही है। कार्यपालिका व न्यायपालिका के मध्य इस विषय पर टकराव अप्रिय घटना को जन्म दे रहा है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने दो दिन पूर्व ही कहा था, न्यायपालिका के लिये पूर्ण पारदर्शिता अनिवार्य है। भारत के उपराष्ट्रपति ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि संसद द्वारा बनाये गये कानून को अवैध करार देने का न्यायपालिका को अधिकार नहीं है। अभी गत शनिवार को मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड ने सील बंद लिफाफा व्यवस्था को उचित नहीं माना है।

भारत सरकार के न्याय मंत्री किरन रिजीजू कुछ दिन पूर्व ही दिनांक 18 मार्च, 2023 को कहा था कि कुछ रिटायर्ड एक्टीविस्ट न्यायधीश व सीनियर एडवोकेट्स इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं मानो वे न्यायपालिका का प्रतिनिधित्व विपक्ष पार्टी के रूप में कर रहे हैं तथा ये रिटायर्ड जज एन्टी इण्डिया है। भारत के कानून मंत्री ने India To Day Conclave में भाषण देते हुये उक्त विचार सेमिनार में अभिव्यक्त किये। सेमिनार में रिटायर्ड जजेज व कुछ सीनियर एडवोकेट ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। सेमिनार का विषय था Accountability in Judicial Appointments जिसे आयोजित किया था Compaign for Judicial Appointments विषय के विपरीत भाषणों का विषय मूलत: केन्द्रित रहा, "सरकार कैसे न्यायपालिका के कार्य में दखल दे रही है।" कानून मंत्री के भाषण का विषय था, Justice for All: The Endeavour and the Gap इसी कॉनक्लेव के दूसरे सत्र में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड इण्डिया टूडे की Conclave ने सेमिनार में भाग लिया। विषय था Justice in the Balance उन्होंने Constitution Democracy पर खुलकर वार्ता की। इस सेमिनार में पूर्व मुख्य न्यायाधीश शरद अरविन्द व यू.यू. ललित भी थे। यह पहला अवसर था जब देश के मुख्य न्यायाधीश ने जो सिटिंग जज हैं, उन्होंने प्रश्नों के उत्तर दिये। पहला प्रश्न जो उनसे पूछा गया वह था, "न्यायालयों मे ढेर सारे केसेज पेंन्डिग हैं, इससे कैसे राहत मिलेगी?" मुख्य न्यायाधीश चन्द्रचूड ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि तकनीकी के मार्ग पर चलकर इसकी चुनौती स्वीकार की जा सकती है। माननीय मुख्य न्यायाधीश ने कहा हमने Technology की सहायता से कोविड के समय वीसी का प्रयोग किया है। मुख्य न्यायाधीश ने आशावादी होने की बात पहले भी कही है उनका कहना था कि न्यायिक व्यवस्था सहज, त्वरित और पारदर्शी होनी चाहिये। उन्हीं के प्रयासों से हाईकोर्ट्स में ऑन लाइन आरटीआई पोर्टल प्रारम्भ कराया है। उनके साहसी व प्रगतिशील विचारों के कारण ही बंद लिफाफों की प्रस्तुति बंद हुई है। उनका कहना था हमारी न्याय व्यवस्था उपनिवेशवाद के जमाने की है। हमारी व्यवस्था में सुधारों की बहुत आवश्यकता है। माननीय मुख्य न्यायाधीश ने हमेशा ही Constitutional Democracy पर बहुत जोर दिया है। सीजेआई ने कहा कि हमें हमारे तौर तरीकों को बदलना होगा व गति देनी होगी। जजों की संख्या बढ़ानी होगी तथा Infrastructure में प्रगति के साथ सुधार लाना होगा, क्योंकि नागरिकों को Access Justice ही नहीं अपितु न्याय को नागरिकों की आवश्यक सेवा मानना होगा। न्याय को जनता के घरों तक पहुंचाना होगा वह भी उनकी भाषा में। जजों की नियुक्ति को पारदर्शी बनाना होगा।

भारत देश की सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड ने बहुत संयम से काम किया है और कर रहे हैं इससे यह स्पष्ट होता है कि न्यायपालिका, कार्यपालिका व विधायिका में टकराव होने पर भी शीघ्र ही संबंध सुधरेंगे। कुछ भी हो देश की न्यायपालिका में सबको विश्वास है।

कॉलेजियम सिस्टम के संबंध में माननीय मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि अभी तक जो भी सिस्टम रहे हैं, उनमें यह श्रेष्ठ है। सीजेआई ने कहा कि न्यायाधीशों पर दवाब है, सही नहीं है। जजों को जनता का विश्वास जीतना होगा। सीजेआई ने युवाओं को जूडिशियरी में आने का निमंत्रण दिया।

सीजेआई ने देश की जूडिशियरी व अन्य देशों की जूडिशियरी की तुलना करते हुये कहा कि भारत में जजेज 365 दिन काम करते हैं जबकि अमेरिकन सुप्रीम कोर्ट केवल 80 दिन काम करती है।

सेमिनार का प्रथम सत्र देश के कानून मंत्री के नाम रहा और बाद का सत्र सीजेआई के नाम।

कानून मंत्री किरन रिजीजू ने कहा कि सरकार की आलोचना जगह जगह हो रही है जो उचित नहीं है। कानून मंत्री ने कहा कि जब राहुल गांधी कहते हैं कि इण्डियन जूडिशियल को हाईजेक कर लिया गया है। देश में डेमोक्रेसी समाप्त हो गई है। ये बातें सुनकर समझ में आता है देश में विरूद्ध विद्रोह के सुर बुलन्द हो रहे हैं। टुकडे-टुकडे गेंग व अन्य किसी गेंग को जो देश में विद्रोह की बात कर रहे हैं उनसे निपटना ही होगा। सीजेआई व कानून मंत्री रिजीजू के उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट नजर आता है कि देश में सब कुछ ठीक नहीं है। देश की अखण्डता को भी खतरा है। न्यायपालिका, विधायिका व कार्यपालिका एक-दूसरे को सहयोग न देकर आलोचना कर रहे हैं। जबकि अनुच्छेद 50 में न्यायपालिका को अपने से अलग कर लिया है। कॉलेजियम को लेकर सुप्रीम कोर्ट कार्यपालिका में विवाद चल रहा है। कुछ ऐसे भी हैं जो देश को ही तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। देश के संविधान में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि न्यायपालिका, कार्यपालिका तथा कार्यपालिका तीनों क्षेत्र भिन्न हैं। अपने अपने क्षेत्र में वे सुप्रीम हैं। एक-दूसरे के क्षेत्र में दखल का प्रश्न ही पैदा नहीं होता, फिर भी आपसी मनमुटाव है। सुप्रीम कोर्ट ने कॉलेजियम की सिफारिश को मानने में विलम्ब करने पर सरकार की तीखी आलोचना की है।

भारत देश की सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड ने बहुत संयम से काम किया है और कर रहे हैं इससे यह स्पष्ट होता है कि न्यायपालिका, कार्यपालिका व विधायिका में टकराव होने पर भी शीघ्र ही संबंध सुधरेंगे। कुछ भी हो देश की न्यायपालिका में सबको विश्वास है।

यह सच है हमारी न्याय व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। न्याय सस्ता, त्वरित व सुलभ होना चाहिये।

सत्यमेव जयते!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

राशिफल शुक्रवार 24 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2080, अश्विनी नक्षत्र दिन 1:21 तक, वैधृति योग रात्रि 1:42 तक, गर करण सांय 5:00 तक, चन्द्रमा मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज मत्स्य जयन्ती, गणगौर (राजस्थान) गौरी आन्दोलन ततीया, मनोरम तृतीया, मन्वादि, सारदुल है। आज रमजान मु. मास 9 आरम्भ होगा। रवियोग दिन 1:21 से आरम्भ होगा। राजयोग दिन 1:21 से सांय 5:00 तक है। भद्रा रात्रि 4:36 शनिवार 4:23 तक रहेगी। आज अरूधनी व्रत पूजन, ईश्वर गौरी विसर्जन, वैधृति पूण्य और मेला गणगौर है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:01 तक, लाभ अमृत 8:01 से 11:02 तक, शुभ 12:33 से 2:03 तक, चर 5:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:30, सूर्यास्त 6:36

मेष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आज मन:स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत समस्या के कारण मन में भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में आपसी अनबन वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

तुला
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नवीन व्यावसायिक योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आज रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

आओ भगवान-अल्लाह वाला खेल समझें

महावीर सिंह

एक बड़े कस्बानुमा गांव में दो अधेड़ उम्र वाले नोजवान (एक हिन्दू, दूसरा मुसलमान) शाम के धुंधलके में कुछ गुफ्तगू कर रहे थे। घुमन्तु ने भी कान लगा लिए और कुछ कुछ सुना–

एक युवक नें पूछा--भगवान बड़ा या अल्लाह?

दूसरे नें छोटा सा उतर दिया-तुम्हारे लिए भगवान और मेरे लिए अल्लाह बड़ा है

पहले ने फिर पूछ लिया किन्तु दोनों में छोटा-बड़ा तो होगा ही?

दूसरे ने कह दिया, इस से अपने को क्या फर्क पड़ता है, वो आपस में ही तय कर लेंगे--अपन क्यों माथापच्ची करें?

उनकी बात बंद होने के बजाए आगे ही बढ़ी ---

भगवान-अल्लाह-यशुमसिह को कोन सा देश, कौन सी भाषा, जाती सर्वाधिक पसन्द है? भारत ज्यादा पसंद या पाकिस्तान या अरब-ब्रिटेन-यूरोप-अमरीका के देश?

अरे भाई उनकी वो जानें, अपने को तो यहीं जीना-मरना, यहीं कमाना-खाना, अपन क्यों माथाफोड़ी में लग गए--कोई काम धंदे की बात करें।

आजकल चौकड़ी पर भी 10 में से मुश्किल से 4,5 को काम मिलता है। काम मिलता है तो घर चलता, ठाले दिनों का खर्च तो लाला की उधारी से ही चलता जो महीने बाद 100 के 105 लेता है--कंगाली में आटा गिला।

एक नें फिर पूछ लिया---- भगवान, अल्लाह और ईसाइयों के यशु अपनी भाषा समझते तो हैं क्या? जो भाषा, देश भगवान-अल्लाह-यशु को पसन्द नहीं, उस देश के लोगों को वे कैसे दण्ड देता है? क्या इन बातों को लेकर वे आपस में लड़ते-भिड़ते भी है? उनका समझौता कोन कराता होगा? क्या कोई ताकतवर भगवान दूसरे कमजोर भगवान को जेल में भी डाल देते हैं, जैसा उनके बनाए बन्दे धर्म के नाम की आड़ लेकर करते हैं? उनके यहां भी बुल्डोजर, तलवार आदि से फैसला होता है या कोई और तरीका है? वे लोग अपने झंडों के रंग-ऊंचाई कैसे चुनते है और वे झंडे, डंडे रखते भी या नही?

वे इस बात पर एक राय दिखे कि यह लड़ने-लड़ाने, मरने-मिटाने, गाली-गलौज करने, लाल-पीली आंखे दिखाने-बात-बेबात के रावण, कंस, जिनों की तरह आक्रोशित होने वाले सारे लड़ने भिड़ने के काम हम बंदों को डेलीगेट कर रखे है। वह खुद, शायद, यह करने में सक्षम नहीं लगता।

दूसरे नें बात आगे बढाई--अभी तुर्की में जलजला आया न, ऐसे ही ऊपर वाला बन्दों, देशों को दंड देता होगा?

नहीं भाई, बाढ, तूफान, जलजला तो अमरीका, चीन, भारत, पाकिस्तान, रूस सब में ही आ जाता है--इस से उनका क्या सम्बन्ध है?

नहीं, नहीं यह आसमानी ताकते केवल उसके ही पास है, वही यह सब करता है--दूसरा बीच में बोल पड़ा तो फिर भगवान-खुदा सबसे ही नाराज लगता है।

उनकी चर्चा काम धंदे के बजाए इसी भगवान, अल्लाह, यशु के चारो तरफ ही सिमटती जा रही थी।

मुस्लिम युवक बोला यार, हमारे यहां एक बात तो ठीक है कि हमारे एक ही भगवान है, तुम्हारे तो बहुत सारे है। इनमें आपस में कोई लड़ाई-झगड़े नहीं होते?

हिन्दू युवक बोला हमारा धर्म बहुत पुराना है। बहुत पहले बंदों नें उनके नाम पर ऐसा किया होगा और लड़-लड़ कर थक गए होंगे, अब तो सब शांत है। हमारे धर्म की विशेषता है कि हम लोग सभी देवी-देवताओं को मान लेते हैं। विष्णु-लक्ष्मी, भोले बाबा-पार्वती-गणेश जी, सरस्वती, दुर्गा, काली माता, राम-कृष्ण-बुद्ध-हनुमान जी, स्थानीय देवता तेजाजी, गोगाजी, रामदेवजी, देवनारयनजी, हड़बूजी, जांभोजो, यहां तक कि गांव-मोहल्ले के भोमीयाजी व ओर कोई भी हो तो उन सब को पूज लेते है-किसी को नाराज नही करते, फिर काहे की लड़ाई। कहीं-कहीं तो रावण, महिसासुर, परशूरामजी, मनु महाराज को भी पूज लेते हैं। ब्रह्मा जी का सृष्टि बनाने का काम पूरा हो गया। उनके पास अब देने को कुछ ज्यादा नही और सृष्टि के खात्मे में किसी को रुचि नही, इसलिए उनकी पूछ थोड़ी कम ही है।

हिन्दू युवक आगे बोला कि तुम्हारे यहां भी तो अल्लाह के नाम पर बन्दे शिया-सुन्नी करते ही है? ईसाइयों में भी काफी पहले, अलग-अलग चर्चों में कुछ ऐसा ही होता था--अब वे भी 2000 साल पुराने हो गये, सो लड़ने लड़ाने से थक गए।

हिन्दू युवक आगे बोला, हमारे धर्म को तो सनातन बताते है-दूसरा कोई धर्म ऐसा नही। दूसरे बन्दे ने पूछ लिया, यह सनातन होता क्या है, आजकल, बहुत सुन रहे है इसके बारे में?

दूसरे ने कहा, मुझे भी कोई खास तो पता नहीं किन्तु आजकल काफी सनातन-सनातनी नाम से टीवी चैनल्स पर कुछ लाल-पीले होने वाले बाबा खूब सुना रहे है। कई बाबा-धर्मगुरू-मठाधीस कहते है हिन्दू धर्म बहुत पुराना है, जब से आदमी है तब से, सबसे पुराना। तुम्हारे वाला और दूसरे धर्म तो महज एक-डेढ़-2-3 हजार साल पुराने ही हैं। दूसरा युवक बोल पडा-तो फिर बूढ़े-जवान का अन्तर हुआ। दोनों में अच्छाई-बुराई-गुण-दोष-सुस्ती-चुस्ती भी वैसे ही, जैसी बूढ़े-जवान में। दोनों इस बात पर सहमत दिखे कि छोड़ो यार, यह समझने-समझाने वाला काम अपने बड़े-बड़े धर्मगुरुओं-मठाधीशों, इमाम-उलेमाओं के लिए छोड़ते हैं-अपने लिए तो रोजी-रोटी का सवाल ही बड़ा है।

फिर भी बात खत्म नहीं हुई। एक ने कहा देखो--कभी कभी इन धर्म के लोगों की बात सुनते है तो मैं कन्फ्यूज हो जाता हूँ--तुम्हारे वाले कहते है हर आदमी में रूह होती है, हमारे वाले कहते है आत्मा। इसी प्रकार जन्नत-स्वर्ग, दोजख-नरक, काफिर-नास्तिक की बात बोलते रहते है। जन्नत में हूरें बताते है, स्वर्ग में अप्सराएं।

यदि कोई मेरे जैसा अनाड़ी पूछ लेता है---बाबाजी-मौलवी जी किसी नें स्वर्ग-नरक-जन्नत-दोजख से आकर बताया क्या वहां क्या कुछ है, किसी नें आत्मा रूह देखी क्या? बाबा-मौलवी, उलेमा, पुजारी सबी के सभी भृकुटि तान कर कहते है, बन्दे, श्रद्धा रख-भक्ति कर-प्रश्न नहीं, धर्म शास्त्रों-अल्लाह की किताब--बाबाओं-पुजारीयों-काजी-मौलवी-उलेमाओं के कहे पर ईमान ला।

एक बंदा ओर जुड़ गया इस गुफ्तगू में। वह बोला– देखो धर्म सब एक से, सब के उपदेश एक जैसे केवल कहने-समझने का अंतर होगा-- सच्च बोलो, बड़ों की इज्जत करो, पड़ोसी का ख्याल रखो, मन में दया भाव रखो, आपस में प्रेम-सद्भाव रखो, समाज में शांति रखो, आवश्यकता से अधिक लोभ-लालच से परहेज करो, मनसा-वाचा-कर्मणा हिंसा से दूर रहना वगैरा वगैरा।

नया जुड़ा बंदा कुछ ज्यादा जानकर था। आगे बोला, गुरु नानकदेव जी एक बार कहीं मक्का-मदीना गए, मस्जिद की ओर पैर कर सो गए। किसी नें आपत्ति की, खुद के घर की तरफ पैर कर नहीं सोते-- तो नानकजी ने कहा---जिधर खुदा का घर न हो, उधर पैर कर दो भाई। आ गया न इसमें सारे ग्रंथों का सार। उसी ने आगे कहा भक्त रैदास नें जीवन, भक्ति का सार बता दिया 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', कुछ ऐसा ही कबीर नें कहा-'पथर पूजे हरी मीले तो मैं पूजू पहार--'। ऐसी वाणी ही दादू दयाल, पीपाजी, धन्ना भगत, मीरा बाई, कर्मा बाई, नरसी भगत, बाबा फरीद, भारत में चिश्तिया पंथ के कई औलियाओं और भारत के उतर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम के अनेक सच्चे ईश्वर भक्तों की थी।

सभी धर्मों में यह ध्वनि निकलती है--एको अहम द्वितीय नास्ति कोई--सर्वत्र मै ही अर्थात परम् शक्ति व्याप्त हूँ-मैं ही सब में हूँ--आत्मा सो परमात्मा--वैसुदेव कुटुम्बकम-एक ही लाली सब लाल में-यही सब धर्मों के ग्रन्थों का मर्म है, बाकी सब आवरण।

सभी धर्म हिन्दू, बोध, इस्लाम, ईसाई के ग्रन्थों में यह सभी अच्छे जीवन के मूल्य दिए हैं। यही सनातन है।

हम इंसानों ने धर्मग्रन्थो में जो लिखा है उस पर अपनी अपनी समझ-कुसमझ-धंदे की मति की परतें चढा दी। मूल बात इन परतों में दब गई। आजकल अधिकतर लोग इन परतों की व्याख्या पर झगड़ रहे है।

सामन्त नें कहा आओ, धर्म के सहारे लूट की सीमाएं बढ़ाएं, धर्म गुरु नें कहा आओ सामन्त के सहारे धर्म के लिए स्त्रोता, अनुयायी बढ़ाएं। इसमें हिंसा, प्रतिशोध, अहम जैसे सेनापति जुड़ते गए।

उनकी चर्चा इस गम्भीरता से फिर कुछ नीचे के स्तर पर आ गई। एक नें फिर कहा आजकल तो बड़े से बड़े धर्मस्थान बनाने की होड़ सी चल रही है। कईयों नें तो सड़क-रास्तों के बीच में, कोने पर, अन्य सार्वजनिक स्थानों ही बना डाले, कोई माई के लाल में ताकत नहीं उनको खरोंच भी लगा दे। बुल्डोनर की भी हिम्मत नही, उधर देख भी ले। लोग मंदिर आदि, अपनी जमीन पर कम ही बनाते है। धर्म स्थलों पर चंदा, चढ़ाव खूब आता है, शायद इसीलिए यहां-वहां-कहीं भी इनके बनाने की होड़ सी भी रहती है।

दूसरे नें कहा देखो यह तो साफ है धर्म का काम-धन्दा जनता के चंदे-वन्दे के पैसे से ही चलता। कभी कुछ बड़े सेठ लोग भी बड़ा दान दे देते है। इन जगहों पर दान पेटियां न हो तो क्या हो?

मुसलमान युवक बोल पड़ा, कुछ भी हो, तुम्हारे वाले बाबा लोग हैं बड़े चमत्कारी। हजारों की भीड़ में से बंदों को छांट कर फट बता देते है कहाँ से आए, क्या चिंता खाए जा रही है और तत्काल समाधान भी बता देते है। भगवान तक पहुंच है, तभी बता पाते होंगे। हमारे वाले इतने पहुंचवान नहीं।

दोनों इस बात पर भी सहमत हुए --इन मसलों पर फैसले अपने बड़े-बड़े धर्मगुरुओं-मठाधीशों, इमाम-उलेमाओं के लिए छोड़ते हैं, वो इस काम में उस्ताद हैं, यह उनका धन्दा भी तो है-उनकी भी रोजी-रोटी-ऊंचे-नीचे-छोटे-बड़े-अहंकार का सवाल है? अपने गांव और आस पास के 100,50 गांवों में तो इस पर कोई तकरार है नही।

यह सब कस्बों, शहरों के, बडे लोगों, कुछ शरारती लोगों का काम है। वैसे धर्म तो सारे ही ठीक है। झगडे की जड़ तो यही लोग है। जैसे अपने लिए तो रोजी-रोटी का सवाल बड़ा है, वैसे इनके लिए राज-अहंकार-प्रभुत्व का सवाल बड़ा है। उसी के लिए अपने जैसे छोटे आदमियों को लड़ाते-भिड़ाते रहते है।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

प्रजा में अपने राजा के प्रति विश्वास का प्रतीक है भीण्डर की गणगौर

भीण्डर में प्रतिवर्ष निकाली जाने वाली गणगौर की सवारी का नजारा।

- भीण्डर में डूंगरपुर रियासत से लाई हुई विजय प्रतीक है गणगौर
- आज राजशाही ठाठ-बाट से निकलेगी गणगौर की सवारी

भीण्डर, (निसं)। मेवाड़ की ऐतिहासिक धरती व उदयपुर दरबार के 16 उमरावों में से एक भीण्डर ठिकानें को आन-बान-शान के रूप में याद किया जाता है। शौर्य, पराक्रम और बलिदान की इस धरा से ऐसी कई अनगिनत गाथाएं जुडी हुई हैं जिसमें डूंगरपुर से लाई गणगौर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह घटना यहां के शासकों के राजनीतिक कौशल और कुटनीति की अनुठी मिशाल है तो अपनी प्रजा में राजा के प्रति विश्वास की मिशाल हैं भीण्डर की गणगौर।

प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप के अनुज भ्राता महाराज शक्ति सिंह के वंशज व उनके पौते भीण्डर महाराज सम्बल सिंह शक्तावत जो वर्तमान वशंज महाराज रणधीर सिंह भीण्डर के पन्द्रहवीं पीढी पूर्व के शासक थे। एक बार दो व्यापारी डूंगरपुर रियासत के आसपास गांवों में व्यापार करने पहुंचे। वहां ग्रामीणों को अनाज वाडी पर दिया करते थे। इस तरह के लेन-देन को लेकर किसी कर्जदार से भीण्डर के दो व्यापारियों की कहासुनी हो गई तो उन्होंने डूंगरपुर महारावल से शिकायत कर दी। इस पर महारावल ने दोनों व्यापारियों को पकड करके बिना सुनवाई कारागार में डाल दिया। कुछ दिनों बाद डूंगरपुर महारावल ने अपने दरबार में दोनों व्यापारियों से पुछताछ की, जिसमें पूछा कि तुम कहां के रहने वाले हो तो व्यापारियों ने निडरता से जवाब दिया कि हम 'सबला' के ठिकाने के रहने वाले है। इस पर महारावल ने आश्चर्यचकित होकर पुछा यह सबला कौन है? इस पर दोनों व्यापारियों ने कहा कि हमारे भीण्डर महाराज को इस बारे में सुचना मिलेगी तो वह हमें निश्चित रूप से छुडा कर ले जाएंगे। व्यापारियों के इस उत्तर से महारावल सोच में पड गए उन्होनें सोचा इसी बहाने सबला से मुलाकात हो जाएं यह सोच कर उन्होंने एक व्यापारी को छोड दिया व दूसरे को पुन: कारागार में डाल दिया।

डूंगरपुर महारावल के चंगूल से छुट कर व्यापारी सीधा भीण्डर ठिकाने पर पहुचां और महाराज सम्बल सिंह शक्तावत को पुरी आपबीती बताई। उन्होंने डूंगरपुर कारागाह में बन्द एक व्यापारी को छुडाने की ठान ली। उन्होंने इस जोखिम भरे कार्य को पुर्ण करने का जिम्मा अपने विश्वस्त फौजदार माणक चन्द्र सामर को सोंपा और उन्हें कुछ बहादुर राजपुत सरदारों के साथ डूंगरपुर भेजा। माणक चन्द्र सामर अपने बुद्धि, चातुर्य व कौशल से डूंगरपुर कारागार तक पहुंच कर वहां तैनात सिपाहियों को परास्त कर व्यापारी को छुडा लिया। रिहा करने के बाद सामर के दिमाग में एक बात आई कि मुझे यहां से विजय प्रतीक के रूप में कोई ने कोई निशानी भीण्डर महाराज के पास अवश्य ले जानी चाहिए। उस दिन गणगौर पर्व होने से डूंगरपुर में परम्परागत तरीके से गणगौर सवारी निकाली जा रही थी। फौजदार माणक चन्द्र सामर ने अपने साथी राजपुत सरदारों के सहयोग से डूंगरपुर की गणगौर को अगवा कर लिया व डूंगरपुर के महलों में लगी कीमती पत्थरों की नकासी वाली झालियां भी निकाल कर साथ ले आए।

डूंगरपुर से लाई गई गणगौर प्रति वर्ष भीण्डर के राज-महलों से चैत्र शुक्ला तीज और सावणी तीज को गाजे-बाजे के साथ शाही लवाजमें में परम्परागत तरीके से निकाली जाती है। इस अवसर को भीण्डर नगर एवं आसपास के गांवों से ग्रामीणजन हर्षोल्लास से इस सवारी में शामिल होते है।

वल्लभनगर पूर्व विधायक रणधीरसिंह भीण्डर ने बताया कि सनातन धर्मोत्सव सेवा समिति व राजमहल भीण्डर के संयुक्त तत्वावधान में 24 मार्च को परम्परा अनुसार गणगौर सवारी निकाली जायेगी। गणगौर महोत्सव के तहत राजमहल में सांयकाल 5 बजे राजघराने की महिलाएं एवं क्षत्राणियों गणगोर की पूजा-अर्चना करने के बाद गणगोर को मुख्य दरवाजे से बाहर के चौक में लाया जाएगा जहां से भव्य शोभायात्रा के रुप में रवाना होगी। जिसमें राजपरिवार के सदस्य परम्परागत वेशभुषा में क्षत्रियों व नागरिकों का नेतृत्व करते हुए चलेंगे। गणगौर सवारी नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए सुरजपोल स्थित कैलाश धर्मशाला के बाहर पहुंचेगी। जहां गणगौर को नागरिकों के दर्शन के लिए रखी जाएगी व पूजा अर्चना की जाएगी। यहां से गणगौर की सवारी पुन: राजमहल में लाई जायेगी।

सड़क निर्माण में घटिया सामग्री का उपयोग

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ उपखंड में मोटरों का खेड़ा ग्राम पंचायत के बिट्ठलपुरा गांव में पंचायत द्वारा ठेकेदार के मार्फ़त सीसी रोड़ का निर्माण कराया जा रहा है। ठेकेदार द्वारा सड़क निर्माण में घटिया सामग्री का उपयोग किया जा रहा हैं। वहीं सड़क को बेतरतीब बनाया जा रहा है। इसको लेकर ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत को कई बार अवगत कराया। लेकिन कोई समाधान नहीं किया। गुरुवार को उच्चाधिकारियों को शिकायत कर जांच की मांग की हैं।

मांडलगढ़ के बिट्ठलपुरा गांव निवासी देबीलाल चौधरी के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को प्रेषित शिकायत पत्र में बताया कि बिट्ठलपुरा गाँव में ग्राम पँचायत द्वारा स्वीकृत 7 लाख राशि की सीसी रोड़ का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। सीसी रोड़ का निर्माण सरकारी ज़ी शिड्यूल के निर्धारित मापदंड के अनुरूप नहीं किया जा रहा है। सड़क की मोटाई घटाकर घटिया निर्माण सामग्री का उपयोग किया जा रहा है। वहीं सीसी सड़क के दोनों ओर बेतरतीब तौर से नाली बनाई गई है। मौक़े पर 5 दशक पुरानी पक्की नाली को बन्द कर सड़क को संकरा कर दिया है और देबीलाल चौधरी के भूखण्ड में नाली निकालने का प्रयास किया जा रहा हैं। इस मामले को लेकर ग्रामीणों के विरोध के चलते ठेकेदार ने सड़क का निर्माण बन्द कर दिया। जिससे नालियों का गंदा पानी पीड़ित देबीलाल चौधरी के भूखण्ड में एकत्रित होने लगा है। दुर्गंध से मौसमी बीमारी फैलने की आशंका बनी हुई हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि मौक़े पर सड़क निर्माण के दौरान ठेकेदार से शंकरलाल, सुआ लाल, प्रभुलाल, रणजीत, श्रवण कुमार, प्रहलाद व पूरण लाल सहित अन्य लोगों ने मिलीभगत कर सड़क की नालियों का निर्माण बेतरतीब रूप से किया है। उक्त लोगों ने अपने अपने मकानों के बाहर चबूतरियों को नहीं हटाया हैं।जिससे सड़क की नाली बेतरतीब हो गई हैं। पत्र में बताया कि उक्त लोगों ने ठेकेदार से अपने घरों के अन्दर तक सीसी रोड की सामग्री को डलवा ली हैं।

ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी युवराज सिंह चौधरी ने बताया कि बिट्ठलपुरा में विधायक कोष से 7 लाख राशि की सीसी सड़क बनाई जा रही है। मौक़े पर बेतरतीब नाली निर्माण से विवाद उत्पन्न हुआ है। ग्रामीणों से समझाइश की जा रही है। नहीं माने तो नियमानुसार पुलिस कार्रवाई कराई जाएगी।

मांडलगढ़ पंचायत समिति कनिष्ठ अभियंता आदित्य कुमार तिवारी ने बताया कि ग्रामीणों की शिकायत मिली है। मौक़े पर जाकर सीसी सड़क निर्माण की गुणवत्ता की जांच शुक्रवार को की जाएगी। मौक़े पर घटिया निर्माण होने पर ठेकेदार को पाबंद कर निर्धारित मापदण्ड से सीसी रोड़ बनाया जाएगा।

मांडलगढ़ के बिट्ठलपुरा गांव में घटिया निर्माण सामग्री से सीसी सड़क निर्माण कर बेतरतीब नाली बनाई जा रही है।